ikB&11

दीपावली की तैयारी

सभी घरों में चहल–पहल है। सब अपने–अपने घर की साफ–सफाई में लगे हैं। दीपावली में अब दो दिन ही बचे हैं।

सुखदा और संजय अपने पड़ोस के दोस्तों से घरौंदा सजाने और पटाखों की बात कर रहे हैं।

तभी माँ ने कहा– तुम लोग भी अपनी पढ़ाई की मेज तथा किताबों की आलमारी की सफाई कर लो।

दोनों दौड़कर घर में आ गए और पढ़ाई की मेज तथा किताब की आलमारी की सफाई की। पुरानी कॉपियाँ–किताबें, खराब हो गए कलम आदि को हटाया। माँ ने उन्हें पुरानी और बेकार चीजों को आँगन में एक जगह इकट्‌ठा करने को कहा।

घर के अन्य कमरों की सफाई में भी सुखदा और संजय ने हाथ बँटाया।

संजय ने चाचाजी के साथ मिलकर दादाजी के कमरे की सफाई की। सुखदा ने मेज पर नया कपड़ा बिछाया। पुराने अखबार, चिट्ठियों के लिफाफे, दवा की खाली बोतलें और डिब्बों को बाहर इकट्ठा किया।

- आप घर की सफाई में किस प्रकार सहयोग करते हैं?
- आपके घर की सफाई के दौरान किस–किस प्रकार का कचरा निकलता है?
- क्या उस कचरे में से कोई ऐसी भी चीज मिलती है जिसका दुबारा उपयोग किया जा सकता है?
- क्या कुछ कचरा कबाड़ीवाला भी ले जाता है? वह कचरे को कैसे छाँटता है?

/kwi ls lhyu Hkxkuk%

माँ रसोई–घर की सफाई में लगी है। उन्होंने सुखदा को पुकारा और डिब्बों को खोलकर बाहर धूप में रखने को कहा। डिब्बों में मसाले और कुछ खाने के सामान रखे थे। सुखदा को कुछ डिब्बों से खराब गंध आई।

माँ ने बताया बरसात के दिनों में खाने–पीने की चीजें अक्सर खराब हो जाती हैं। उनको धूप लगाने की जरूरत होती है और देखो, सफाई के बाद हमारा रसोईघर अच्छा लग रहा है।

दोनों ने देखा पिताजी जाड़ों में ओढ़नेवाले कंबल, रजाई को धूप में फैला रहे हैं। वे भी छत पर जाने लगे तो माँ ने कहा बच्चों, ये गरम कपड़े लेते जाओ इन्हें धूप में फैला देना। सुखदा और संजय स्वेटर, कोट, मफलर, टोपी और माँ के शॉल धूप में ले जाकर फैलाने लगे। कपड़ों से सिलन की गंध आ रही है। कपड़े फैलाने के बाद संजय छत से दौड़ता हुआ दरवाजे पर आ गया। उसने देखा दादाजी और चाचाजी फूल की क्यारियों और गमलों को साफ कर रहे हैं।

दादाजी ने संजय को गमलों में पानी डालने को कहा। संजय पौधों में पानी डालने लगा।

शाम को घर के सभी सदस्य दादाजी के कमरे में इकट्ठे हुए। पिताजी ने माँ और दादीजी से पूछ कर बाजार से लानेवाले सामानों की सूची बनाई। सुखदा और संजय ने भी

अपने लिए फुलझड़ियों और पटाखों के नाम लिखवा दिए। दोनों ने भी पिताजी के साथ बाजार जाने की बात कही। इस पर पिताजी ने कहा – ''बाजार में दीपावली के अवसर पर भीड़ रहती है, तुम्हें साथ–साथ चलना होगा।''

बच्चों ने कहा– हमें ले चलिए, हम साथ–साथ चलेंगे।

फिर सब लोग सोने चले गए।

सुबह संजय और सुखदा जल्दी ही नहा–धोकर तैयार हो गए। वे पिताजी के साथ बाजार जाने की प्रतीक्षा में थे।

बच्चों जल्दी चलो बाहर लगे रिक्शे पर बैठो। मैं थैला लेकर आता हूँ – पिताजी ने कहा।

बाहर रिक्शे के साथ करीम चाचा खड़े थे। बच्चों ने कहा– अरे करीम चाचा आप! आप तो हमें रोजाना स्कूल ले जाते हैं। आज कैसे आना हुआ?

हाँ बच्चों, आज मैं तुम्हें बाजार ले चलूँगा। बाजार में बहुत भीड़ है। तुम लोग इधर–उधर मत जाना– करीम चाचा बोले।

कुछ ही देर में वे बाजार पहुँच गए। उन्होंने देखा आज बाजार में बड़ी रौनक है। दीपावली के अवसर पर दुकानों की भी सफाई, रंगाई हुई है। रंग–बिरंगे फूलों से दुकानें सजायी गयी। कपड़े, मिठाइयों की दुकानों पर भीड़ है। लोग घर को सजाने के फूल, पत्ते, झालर मोमबत्तियों आदि की खरीददारी कर रहे हैं।

पिताजी ने बाजार से सामान खरीदा और उन्हें लाकर रिक्शे में रख दिया। पिताजी हमें मिठाई की दुकान पर ले गए। हमने मिठाइयाँ और कुछ नमकीन खायी और घर के लिए भी लिए।

L दीपावली के दिन बाजार कैसा दिखता है?

L आप बाजार से कौन–कौन सी चीजें खरीदते हैं?

L दीपावली के दिन क्या आपके घर पर भी मिठाई बनती है? मिठाई कौन बनाता है तथा कौन–कौन सहयोग करता है?

करीम चाचा ने सभी सामानों को ठीक से रिक्शे में रखा। हमारा रिक्शा घर की ओर चल पड़ा। तभी सुखदा और संजय को जोर की उबकाई आने लगी। दोनों ने देखा सड़क के किनारे कचरे का ढेर पड़ा है।

देखो संजय सड़क पर कितना कचरा पड़ा है–सुखदा बोली।

हाँ दीदी, सभी ने अपने घरों तथा दुकानों से निकला कचरा यहाँ लाकर फेंक दिया है– संजय ने कहा।

L आप घर से निकले कचरे को कहाँ फेंकते हैं? इसे कहाँ फेंकना चाहिए?

L कचरे से दुर्गन्ध क्यों आती है?

L आप बाजार में किस–किस प्रकार का कचरा देखते हैं?

घर लौटने पर दोनों ने देखा कि माँ तुलसी के चबुतरे के पास जमीन पर रंगोली बना रही है। रंगोली बहुत सुंदर दिख रही है। सुखदा को भी माँ के साथ रंगोली बनाने में बड़ा मजा आया। तभी सुखदा ने देखा– दादीजी रूई से बाती बना रही थीं। उन्होंने कहा शाम को इनसे दीए सँजोएँगे। सुखदा बोली– "मैं भी बाती बनाऊँगी।"

दादीजी ने सुखदा से कहा– 'हाँ बना लेना, लेकिन पहले जरा रसोईघर से तीन–चार कटोरियों में चावल तो ले आओ। जब वह चावल लाई तो दादीजी ने उन्हें लाल, पीले एवं हरे रंग से रंगने को कहा। रंगे चावलों को पसारने में सुखदा और संजय को बहुत मज़ा आया। उनके हाथ भी रंगीन हो गए। दोनों ने माँ के साथ मिलकर रंगीन चावल को रंगोली में सजाया।

- आपके घर बाती कौन बनाता है?
- बाती बनाने में कौन–कौन सहयोग करता है?

संजय ने कहा– चलो दीदी, हम गुल्लू के घर चलते हैं। गुल्लू का घर साफ–सुथरा लग रहा है। उसकी माँ ने दीवारों पर आकर्षक चित्रकारी भी की। संजय की नज़र गुल्लू के आँगन में खड़े गाय और बछड़े पर पड़ी।

संजय ने पूछा– अरे गाय और बछड़े की पीठ और पेट पर किसने लाल–हरे रंग की चित्रकारी की है?

पिताजी ने, गुल्लू बोला। हम सभी ने मिलकर गाय के घर की सफाई की, उसे नहलाया। पिताजी ने उसके सींग पर तेल भी लगाया।

vkj vc nhikoyh eukuk s

शाम होने को है। सुखदा और संजय ने गुल्लू को अपने घर मिठाई खाने बुलाया और दोनों घर आ गए। चाचाजी छत पर, एक लंबे डंडे के ऊपर आकाशदीप बाँध रहे हैं। सभी ने नये कपड़े पहने हैं। गोधूलिवेला में हम सभी ने दीपों को सजाया। माँ ने पूजा घर और आँगन में तुलसी के पास दीपक जलाया। फिर सभी ने मिलकर छत, बरामदे, चहारदीवारी पर कतार में दीए जलाए। गणेश–लक्ष्मी की पूजा के बाद हमें प्रसाद मिला।

दीदी चलो, हम पटाखे चलाते हैं– संजय ने कहा।

माँ ने कहा– चाचाजी के साथ ही पटाखे चलाना।

संजय और सुखदा पटाखों के डिब्बे लेकर चाचाजी और दोस्तों के साथ बाहर धमा–चौकड़ी करने लगे। थोड़ी देर में घर के सभी सदस्य अपने घरों की छतों पर आ गए। चारों ओर दीपों की जगमगाहट से घर बड़े ही सुन्दर लग रहे हैं।

vH;kl&

1. एक खाली कागज पर रंगोली बनाइए जो दीपावली पर आपके घर में बनाई जाती है।
2. अध्याय में किस–किस प्रकार के कचरों की बात की गई है?

3- nhikoyh dh lQkbZ d nkjku fudys VsVs eVdks] ijkus iksLVdkMZ] xÙks vkfn dks f?kldj] dkVdj vyx&vyx vkdkjks esa cukb,A uhps dqN vkdkj fn;s x;s gSaA

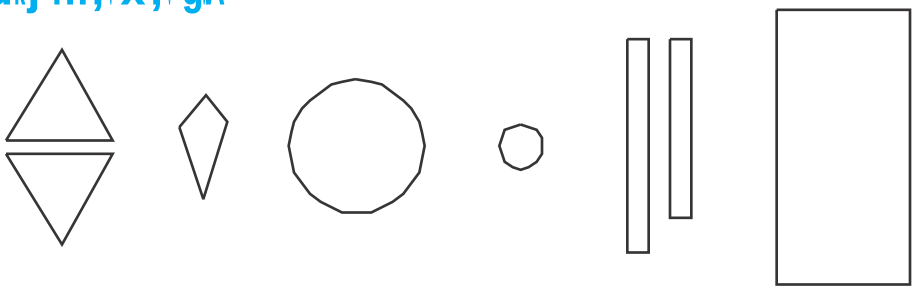

4- bu vkdkjksa dks tksMdj uhps dqN vkÑfr;k¡ cukbZ xbZ gSaA vki Hkh blh rjg dh vU; n'ku vkÑfr;k¡ cukb,A

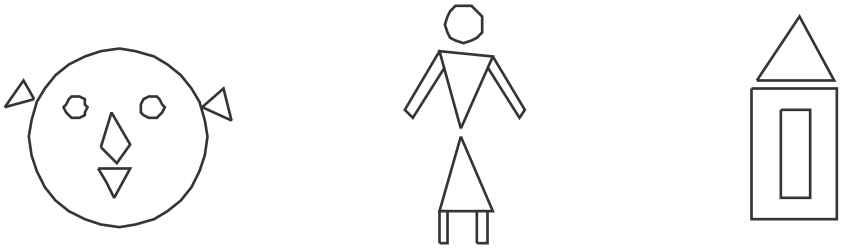

बच्चा औरत घर

5- viu s }kjk cukbZ xbZ vkÑfr;ksa dks i'fly ls dkxt ij cukb,A

vè;kid funsZ'k& पाठ में आए प्रश्नों पर बच्चों के साथ मौखिक चर्चा कीजिए।